Introduction

प्राक्कथन

भारतीय संगीत के लोकप्रिय वाद्य व्हायोलिन का उद्‌भव कई शताब्दियों से संगीत विद्वानों के लिए अनुसन्धान का एक आकर्षक विषय रहा है। भारत में गज़वाले वाद्य यन्त्र प्राचीन काल से ही संगीत का एक अभिन्न अंग रहे हैं। भारतीय लोक-संगीत में पहले से ही गज़वाले वाद्य यन्त्रों का प्रचलन रहा है। आज भी राजस्थान, मध्यप्रदेश, बंगाल, कश्मीर, असम, दक्षिण तथा अन्य प्रदेशों के लोक-संगीत में इस प्रकार के वाद्य यन्त्र प्रयुक्त होते हैं। पाश्चात्य संगीत विद्वानों का मत यह है कि गज़ से ध्वनि उत्पन्न करने का सिद्धान्त पश्चिम में नहीं जन्मा होगा, वरन् पूर्व से ही पश्चिम में आया होगा। नान्यदेव कृत 'भरत भाष्य' के अतिरिक्त 'संगीत सुधा', 'संगीत मकरन्द', 'संगीत पारिजात' तथा 'संगीत सार' जैसे ग्रन्थों में रावण हस्त वीणा अथवा रावणास्त्र नामक वाद्य का उल्लेख मिलता है। 13वीं शताब्दी के ग्रन्थ 'संगीत रत्नाकर' में पिनाकी वीणा का उल्लेख है, जो भारत के प्राचीनतम वाद्य यन्त्रों में से है। भारत के विभिन्न राज्य में गज़ से बजाए जानेवाले वाद्य यन्त्रों का निदर्शन मन्दिरों, भित्तिचित्र आदि में देखने को मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतवर्ष ही गज़वाले वाद्यों की पैतृक भूमि है और इसी गज़-सिद्धान्त से उद्‌भावित व्हायोलिन पश्चिमी संगीतज्ञों के हाथों में एक अलग दिशा में विकसित हुआ एवं भारतीय संगीत में एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने में समर्थ हुआ।

ऐतिहासिक विवरणों से यह जानकारी मिलती है कि प्राचीनकाल से ही भारतवर्ष अर्थनैतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में समृद्ध था, जो युरोपीयों को पहले से ही पता चल चुका था। इसलिए लगभग 15वीं शताब्दी से कुछ युरोपीय देशों ने भारत के साथ व्यापारिक सम्बन्ध जुड़ना शुरू किया। पुर्तगीज़, डच, फ्रेंच तथा इंग्लैण्ड आदि देशों के लोगों का भारत में आना-जाना शुरू हुआ। व्यापारिक सम्बन्धों के कारण सांस्कृतिक और बाद में सामाजिक, राजनैतिक सम्बन्धों का भी विकास हुआ। सांस्कृतिक सम्बन्धों में पारम्पारिक कलाओं से परिचय बढ़ा, जिसमें युरोपीय संगीत व युरोपीय संगीत के वाद्य

यन्त्र भारत में उपस्थित हुए। इन्हीं वाद्य यन्त्रों में व्हायोलिन (फिडल) इस प्रमुख वाद्य का भारत में आगमन हुआ।

भारत के पश्चिम में पुर्तगीज़ों के कारण गोवा, फ्रेंच लोगों के कारण दक्षिण में पोण्डेचरी, ब्रिटिश लोगों के कारण पूर्व में बंगाल आदि प्रदेशों में व्हायोलिन व भारतीय संगीत का सम्बन्ध जुड़ते गया। बंगाल में ब्रिटिशों का अपना एक स्वतन्त्र राज्य 1757 में स्थापित हुआ जिसके कारण बंगाल में व्हायोलिन व उत्तर भारतीय (हिन्दुस्तानी) संगीत का सम्बन्ध सुदृढ़ होते गया।

बंगाल में भारतीय शास्त्रीय संगीत की कण्ठ-संगीत विधा से वाद्य-संगीत विधा का प्रभाव पहले से ही अधिक रहा है। अतः बंगाल में अन्य भारतीय संगीत वाद्यों जैसे - सितार, सरोद, सारंगी, दिलरूबा, इसराज आदि के साथ व्हायोलिन की मित्रता होकर कालान्तर से वह इतनी प्रगाढ़ हुई की आज व्हायोलिन वाद्य भी भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक अभिन्न अंग माना जाता है।